UNIT—IV (1)

Q. पाठ्यक्रम की योजना के बारे में आप क्या जानते हैं? पाठ्यक्रम में विषय केन्द्रित योजना, अध्येता केन्द्रित योजना तथा समस्या केन्द्रित योजना का वर्णन कीजिए।

Ans पाठ्यक्रम अनुभवों का संकलन है जो किसी एक अध्येता की शिक्षा के कार्यक्रम में निहित होते हैं। जिनका नियोजन भूत तथा वर्तमान व्यावसायिक व्यवहारों के सिद्धान्त और शोध सम्बन्धी तथ्यों के रूप में किया जाता है। पाठ्यक्रम उन अनुभवों की रूपरेखा होती है जो कि विद्यार्थियों के लिए नियोजित किया जाता है।

~~परिभाषा~~ पाठ्यक्रम सदैव पूर्व नियोजित होता है। विद्यालय प्रणाली का उद्देश्य समाज की संस्कृति को सुरक्षित रखना और आगे बढ़ाना होता है। पाठ्यक्रम योजना में ये सभी विधि लिए जाते हैं। समाज के कौन-2 से तथ्य और अनुभव धारायें को उनके व्यवस्थित सम्प्रेषण के लिए चुने जायें।

परिभाषा :- सेलर एवं एलेक्जेण्डर, "पाठ्यक्रम प्रकल्प वह होता है जिसका विद्यालय में शैक्षिक अनुभवों के चुनने, नियोजित करने तथा कार्यान्वित करने में प्रयोग किया जाता है। प्रकल्प वह योजना है जिसका सीखने की क्रियाओं को प्रदान करने के लिए शिक्षक द्वारा अनुसरण किया जाता है।।

जेम्स एम० ली के अनुसार "पाठ्यक्रम का आयोजन जिस ढंग से किया जायेगा, वह पाठ्यक्रम को एक स्वरूप प्रदान करेगा। इस प्रकार आयोजन में विधियों में जितने प्रकार के अन्तर हो सकते हैं उतने ही प्रकार के पाठ्यक्रम के स्वरूप होंगे।

②

विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम :→ विषय केन्द्रित योजना शैक्षिक अनुभवों के संगठन के लिए महत्वपूर्ण योजना है इसमें विषय-वस्तु के चारों ओर अधिगम अनुभवों का संगठन किया जाता है। शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विषय वस्तु में प्रवीणता ही मूल आधार है इस उपागम के अन्तर्गत सभी विषयों के ज्ञान को अलग-2 निश्चित किया जाता है उनको के आधार पर पुस्तकों का निर्माण किया जाता है इन पुस्तकों के माध्यम से ही बालक विभिन्न विषयों के ज्ञान प्राप्त करते हैं। पुस्तकों पर अधिक बल दिए जाने के कारण ही इसे पुस्तक केन्द्रित पाठ्यक्रम भी कहा जाता है बालक की अपेक्षा विषय ज्ञान को अधिक महत्व दिया जाता है।

1. यह परम्परागत ज्ञान को आगे बढ़ाने का अच्छा साधन है
2. इससे विद्यार्थी को ज्ञान प्राप्ति के साथ-2 उसे सुदृढ़ करने की सुविधा रहती है
3. इसमें पाठ्यक्रम आयोजन शिक्षण तथा मूल्यांकन की सुविधा होती है जबकि विषय विहीन संरचना को समझ पाना कठिन होता है
4. इस पाठ्यक्रम उपागम में अध्ययन, अध्यापन की सुनिश्चित होती है
5. इस उपागम में नवीन ज्ञान की खोज करने तथा तथ्यों को उपयोगी क्रम में व्यवस्थित करने की सुविधा रहती है

अध्येता केन्द्रित पाठ्यक्रम :→ वह योजना है जो छात्रों के वर्तमान जीवन की प्रवृत्तियों पर आधारित होती है जिसमें अधिगमकर्ता अपने अनुभवों द्वारा अपने व्यवहार में परिवर्तन करते हैं अधिगम सबसे ज्यादा उन परिस्थितियों से सीखते हैं जिनके द्वारा वे अपनी रुचियों व जरूरतों को पूरा करते हैं। अध्येता केन्द्रित योजना में विद्यालय अनुभवों द्वारा विद्यार्थियों को ऐसी विधियाँ सिखाने का प्रयास किया जाता है जिन्हें एक प्रभावी नागरिक समस्या समाधान तथा अपनी रुचि व जरूरतों को पूरा करने के लिए उपयोग में लाता है

समस्या केन्द्रित पाठ्यक्रम :- वह योजना है जिसमें अन्तर्गत बालकों के द्वारा अनुभव की जाने वाली सभी समस्याओं को नियंत्रित करके उन समस्याओं को हल करने के लिए पाठ्यक्रम नियोजित किया जाता है पाठ्यक्रम की समस्या केन्द्रित योजना में समस्याओं का विश्लेषण करने के बाद अधिगम उद्देश्यों को निर्धारित किया जाता है इससे विद्यार्थी में सामाजिक मुद्दों और समस्याओं के बारे में जागरूकता आती है और उनको प्रभावी ढंग से सुलझाने की योग्यता उत्पन्न होती है समस्या केन्द्रित योजना व्यक्ति के अधिगम, अनुभव, संस्कृति तथा वातावरण के क्रियाकलापों पर आधारित होनी चाहिए।

पाठ्यक्रम विकास के चरण :→ पाठ्यक्रम विकास का अर्थ है एक ऐसी निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जो कभी समाप्त नहीं होती है। शिक्षा से सम्बन्धित आवश्यकता की जानकारी छात्रों की उपलब्धियों के द्वारा प्राप्त हो जाती है जिनको शिक्षक प्राप्त करने का प्रयास

करता है परीक्षण के माध्यम से यह भी जानकारी हो जाती है कि किस सीमा तक उद्देश्यों की प्राप्ति हुई है

सीखने के अवसरों के नियोजन द्वारा छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन लाना तथा परीक्षण के माध्यम से यह जानना कि इस नियोजन से किस सीमा तक अपेक्षित परिवर्तन हुआ है इस प्रत्यय को पाठ्यक्रम - विकास की संज्ञा दी जाती है

पाठ्यक्रम के घटक

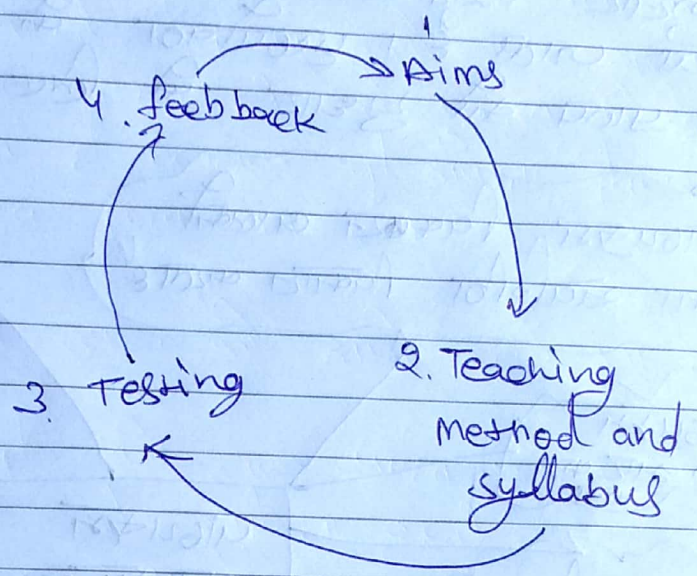

1. शिक्षण उद्देश्य :→ हमें सर्वप्रथम उद्देश्यों का प्रतिपादन करना होता है हमें किस दिशा में आगे बढ़ाना है और विकास के द्वारा हम किन उद्देश्यों को प्राप्त करना चाहते हैं अतः पाठ्यक्रम विकास भी केवल शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति की दिशा में ही किया जाता है

2. अनुदेशात्मक प्रारूप :→ शिक्षा के उद्देश्य को सुनिश्चित करने के बाद बालकों को किस प्रकार अनुदेशन प्रदान किया जाये जिससे वह शिक्षण विधियों तथा पाठ्यवस्तु की सहायता से भली प्रकार

के अधिगम का तर्क।

3. मूल्यांकन :— मूल्यांकन के द्वारा ही यह सुनिश्चित किया जाता है कि इन शिक्षण विधियों व पाठ्यवस्तु के प्रयोग द्वारा शैक्षिक उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया गया है।

5. पृष्ठपोषण :→ मूल्यांकन के द्वारा हम वस्तु स्थिति का अनुमान लगाते हैं तथा उसी के अनुसार शिक्षकों व छात्रों को पृष्ठपोषण प्रदान किया जाता है। पृष्ठपोषण के द्वारा ही पाठ्यक्रम के प्रारूप को सुधार के लिए दिशा प्राप्त होती है।

विभिन्न आयोगों की महत्वपूर्ण संस्तुतियों को लागू

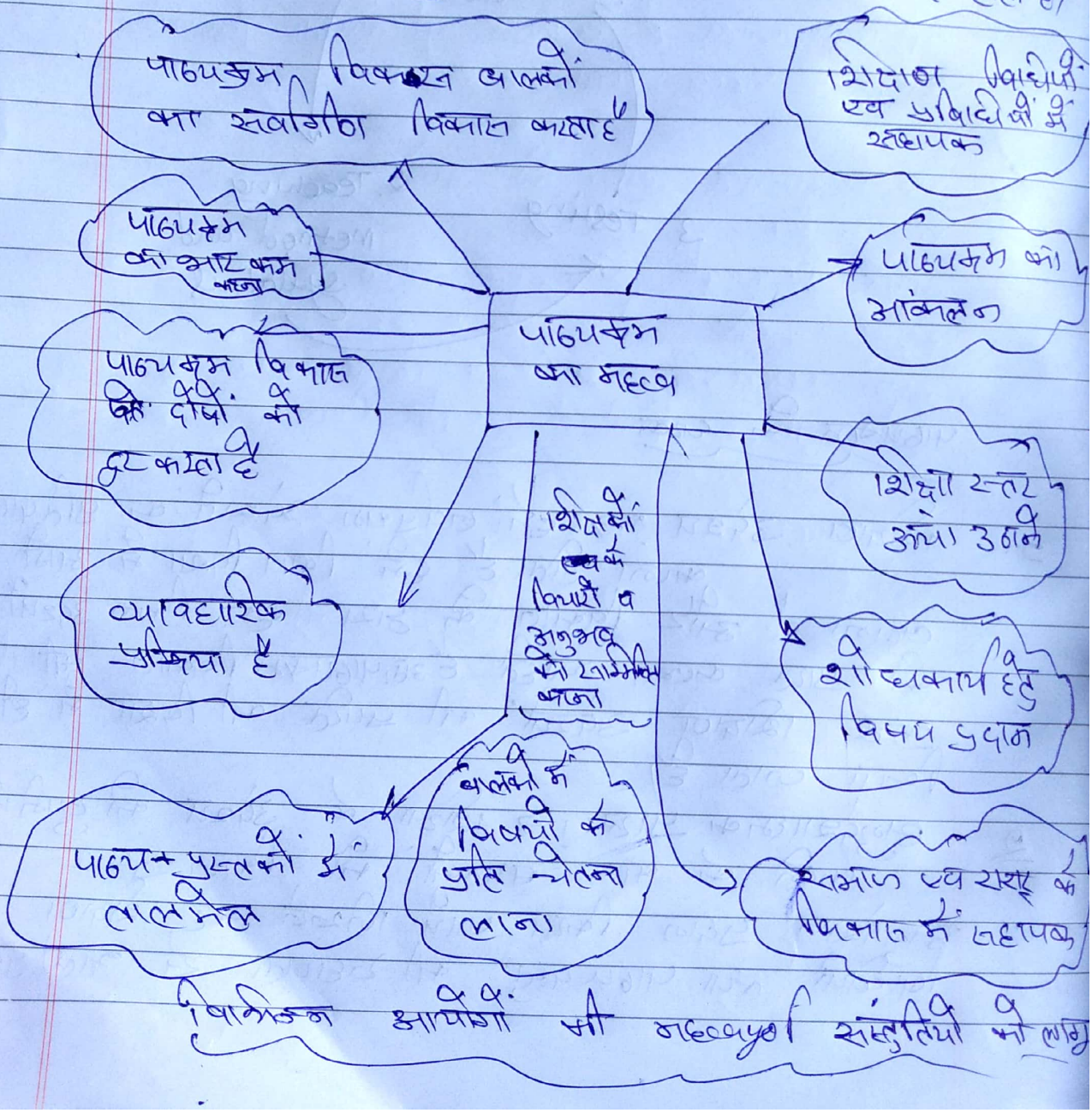

Q.2 पाठ्यक्रम परिवर्तन से आपका क्या अभिप्राय है? पाठ्यक्रम परिवर्तन की आवश्यकता तथा महत्व को वर्णन करें।

Ans पाठ्यक्रम शब्द अपने आप में केवल सार्थक नहीं है उसके साथ विकास शब्द सदैव जुड़ा रहता है तथा इसी से उसकी सार्थकता बनी रहती है। विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसकी आवश्यकता का सदैव ही अनुभव किया जाता है। यह परिवर्तन समाज तथा राष्ट्र की आवश्यकताओं के अनुसार किया जाता है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक शिक्षा ने पाठ्यक्रम के द्वारा शैक्षिक उद्देश्यों को पूर्ण किया गया है। जब-2 शिक्षा के उद्देश्य बदले हैं तब-2 पाठ्यक्रम को भी विकसित एवं परिमार्जित किया गया है।

पाठ्यक्रम परिवर्तन का अर्थ :→ पाठ्यक्रम विभिन्न विषयों एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं व विद्यालय में किये जाने वाले समस्त क्रियाकलापों का योग है। पाठ्यक्रम का निर्धारण तत्कालीन समाज की आवश्यकताओं तथा विचारधारा के अनुसार किया जाता है। सामाजिक परिस्थितियां सदैव परिवर्तनशील होती है इसलिए पाठ्यक्रम को भी समयानुसार नवीनीकरण की आवश्यकता होती है इस नवीनीकरण के साथ ही शिक्षा समाज के द्वारा नवनिर्मित उद्देश्यों को पूर्ण करने में सक्षम होती है। इस प्रकार शिक्षाशास्त्रियों एवम विद्वानों द्वारा शिक्षा के पाठ्यक्रम में किये जाने वाले नवीनीकरण को ही पाठ्यक्रम विकास कहा जाता है।

परिभाषा :→ शेलर एवम अलेक्जेंडर " विद्यालय पाठ्यक्रम में होने वाले परिवर्तनों में समुदाय, छात्र जनसंख्या, क्षेत्र, व्यावसायिक स्थान तथा समाज में हुए परिवर्तन परिलक्षित होने चाहिए तथा इन सभी परिवर्तन के द्वारा पाठ्यक्रम परिवर्तन होने चाहिए"।

पाठ्यक्रम विकास का सम्बंध "पाठ्यक्रम प्रबन्धन से है। पाठ्यक्रम विकास एक कार्य के रूप में अत्यन्त सरल होता है इसमें अधिगम की आवश्यकताओं एवम अपेक्षाओं को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम में विशेष विषय का विशिष्ट स्तर के लिए परिवर्तन किया जाता है।

* आवश्यकता

1. पाठ्यक्रम परिवर्तन की प्रक्रिया में अधिगम अनुभवों के नियोजन द्वारा छात्रों के व्यवहार में विशिष्ट परिवर्तन लाया जाता है।

2. मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु है तथा विभिन्न माध्यम से वह ज्ञान प्राप्ति के प्रयास करता रहता है समाज पर बालकों को भी परिमार्जित ज्ञान की आवश्यकता का अनुभव होता है।

3. जब पाठ्यक्रम विकसित होता है तब बालकों को समस्त प्रकार का विकास और भी बेहतर तरीके से होता है।

4. पाठ्यक्रम परिवर्तन की आवश्यकता से भी वह विभिन्न विषयों के शिक्षण से बालकों के मानसिक पक्ष का प्रशिक्षण करे।

5. पाठ्यक्रम परिवर्तन न केवल छात्रों में अभिरुचियों व योग्यताओं उत्पन्न करता है बल्कि क्षमताओं के अनुरूप उनमें विकास भी करता है।

6. पाठ्यक्रम परिवर्तन बालकों को और अधिक ज्ञान प्रदान करता है जिससे बालक शिक्षा प्राप्ति के बाद अपने पैरों पर खड़े हो सके।

7 पाठ्यक्रम में समय-2 पर सुधार व नवीनीकरण किया जाता है ताकि बालकों को उपयोगी ज्ञान प्रदान करके उन्हें भविष्य के लिए तैयार किया जा सके

8 समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप बालकों के विकास हेतु भी पाठ्यक्रम परिवर्तन अत्यन्त आवश्यक है

9 शिक्षा नीति को तैयार करने का संकल्प लिया गया, जो देश की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं एवम आदर्शों के अनुरूप हो

10 पाठ्यक्रम परिवर्तन ही बालकों को वैज्ञानिक आविष्कारों के लिए तैयार करता है सम्पूर्ण राष्ट्र में व्यावसायिक एवम तकनीकी शिक्षा का विकास समाज एवम देश की आवश्यकता के लिए होना चाहिए

11 पाठ्यक्रम परिवर्तन में बालक में आत्मानुभूति एवम सौन्दर्यानुभूति जैसे गुणों को भी विकसित करने की क्षमता होती है

12 पाठ्यक्रम परिवर्तन बालकों में मस्तिष्क को नवीन विचारों से भरने के लिए आवश्यक है।

13 पाठ्यक्रम के द्वारा उन उद्देश्यों को प्राप्त करने के प्रयास किये जाते हैं जो समय के अनुसार बदलते रहते हैं

14 शिक्षा प्रक्रिया में गुणवत्ता लाने हेतु पाठ्यक्रम परिवर्तन भी वर्तमान समय में अत्यन्त आवश्यक है।

Scanned with CamScanner

सामाजिक तत्व जो पाठ्यक्रम को प्रभावित करने वाले घटक (4)

सामाजिक तत्व →

शैक्षिक समाजशास्त्र के अनुसार
1. बालकों में सामाजिक गुण, प्रजातांत्रिक गुण, सामाजिक विकास व विश्व कल्याण की भावना जागृत करना
2. बालकों में श्रेष्ठ नागरिकता के गुणों का विकास
3. बालकों को जीविकोपार्जन की शिक्षा देना
4. अवकाश के समय के सदुपयोग की शिक्षा दे

शैक्षिक उद्देश्यों के अतिरिक्त शैक्षिक समाजशास्त्र में शिक्षा के कार्यों का भी वर्णन किया।

* मुनरो ने अपनी पुस्तक 'ब्रीफ कोर्स इन दि हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन' में शिक्षा के प्रमुख सामाजिक कार्य।

1. ज्ञान का प्रसार
2. सामाजिक परंपरा की सुरक्षा व हस्तान्तरण
3. सामाजिक विकास
4. सामाजिक नियंत्रण

* स्मिथ - "विद्यालय को व्यापक कार्य संभालना चाहिए एवम् उसे निश्चित रूप से ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए जिससे कि सामाजिक कुशलता, सामुदायिक शक्ति के उत्पन्न तथा पोषित किये जाने का कार्य हो सके।

* बुक ओवर - "शिक्षा समाजीकरण का पर्याय है"
* भागीरथ मिश्र - "शिक्षा एक ऐसी सांस्कृतिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रत्येक शिशु मानव समाज का सदस्य बनता है।"

(व) पाठ्यक्रम परिवर्तन के समाजशास्त्रीय सिद्धान्त ब्राउन व मुरे के अनुसार

1. पाठ्यक्रम मे समाज के सांस्कृतिक मूल्यों का स्थान होना चाहिए। पाठ्यक्रम द्वारा ही नवीन पीढ़ी को उच्च आदर्श प्रदान किये जाने चाहिए।

2. पाठ्यक्रम परिवर्तन सामाजिक, समस्याओं दशाओं तथा आवश्यकताओं के अनुसार होना चाहिए।

3 पाठ्यक्रम को बालकों का निर्माण विश्व समाज के लिए करना चाहिए।

4 विद्यालय का पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो बालक विकास के स्तर के अनुसार हो।

5 सामाजिक कार्यो में भाग लेने के लिए शैक्षिक योजनाऐं सम्मिलित होनी चाहिए।

6 पाठ्यक्रम को सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तनशील एवम लचीला होना चाहिए

7 पाठ्यक्रम परिवर्तन के द्वारा बालकों को अपने कार्य के उत्तरदायित्व निभाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए

8 पाठ्यक्रम परिवर्तन के द्वारा पाठ्यक्रम में जीविकोपार्जक एवम सामाजिक सेवाओं के लिए स्थान प्रदान करना चाहिए।

9 पाठ्यक्रम परिवर्तन के माध्यम से विद्यालय सामाजिक लक्ष्यों तक पहुँचने का प्रयास करता है।

Scanned with CamScanner

B. समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों पर आधारित विषय

समाजशास्त्र का पाठ्यक्रम पर भी पूर्ण प्रभाव

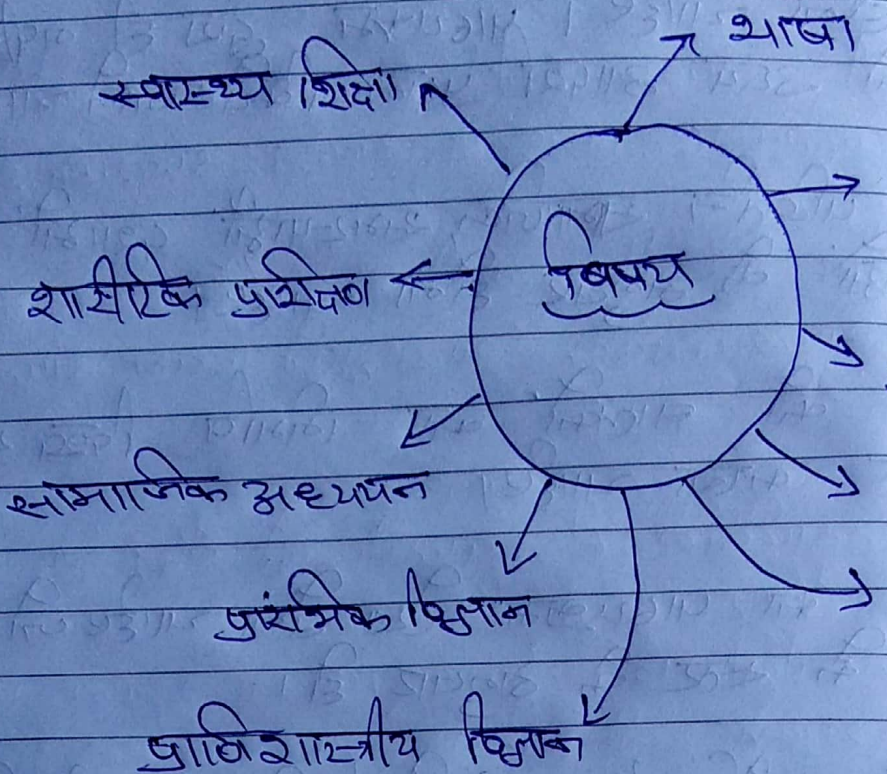

C. सामाजिक एवम राष्ट्रीय विचारधाराओं का पाठ्यक्रम परिवर्तन पर प्रभाव →

1. सामाजिक परिवर्तन एवम पाठ्यक्रम परिवर्तन एक दूसरे के सापेक्षिक होते हैं।

2. वैदिक काल में शिक्षा का पाठ्यक्रम नैतिक एवं आध्यात्मिक विषयों से पूर्ण था।

3. मुस्लिम काल में अरबी, फारसी भाषाओं का अध्ययन हस्तकलाओं की शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, चिकित्सा शास्त्र की शिक्षा आदि विषय प्रमुखता से पढ़ाये जाते हैं।

Scanned with CamScanner

PAGE No
DATE : / / 201

4. मध्य युग के बाद ब्रिटिश कालीन शिक्षा में जब पूरे देश पर ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन हो गया तब ईसाई मिशनरियों ने अपने हितों की पूर्ति हेतु पाठ्यक्रम का निर्माण किया।

5. स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात अनेकों आयोगों का गठन किया गया तथा उनके अनुसार ही पाठ्यक्रम का विकास किया गया।

6. शिक्षाशास्त्रियों तथा समाजशास्त्रियों ने भी पाठ्यक्रम को सामाजिक व्यवस्थाओं के अनुरूप परिवर्तित करने हेतु अपने विचार व्यक्त किये।

(d) सामाजिक संस्थाओं एवम परिवर्तनों का पाठ्यक्रम परिवर्तन पर प्रभाव :-

1. परिवार एवं पाठ्यक्रम परिवर्तन

↓

2. समुदाय तथा पाठ्यक्रम परिवर्तन

↓

3. आधुनिकीकरण तथा पाठ्यक्रम परिवर्तन

↓

4. लोकतंत्र तथा पाठ्यक्रम परिवर्तन

निष्कर्ष :- अतः हम कह सकते हैं कि पाठ्यक्रम परिवर्तन ऐसा होना चाहिए जिससे बालकों के ज्ञान में वृद्धि हो बालकों में समाज एवम राष्ट्र की आवश्यकता पूर्ति एवम विकास हेतु एक प्रभावीपन हो।

Scanned with CamScanner

UNIT – IV

Q3 पाठ्यक्रम परिवर्तन पर प्रभाव डालने वाले कौन-से कारक हैं उनका वर्णन करें?

Ans जीवन दर्शन तथा शिक्षा का चक्र सभ्यता के आदि काल से ही चलता आ रहा है। शिक्षा दर्शन द्वारा बताई हुई प्रगति की दिशा की ओर व्यक्ति एवम् समाज को अग्रसर करता है। वर्तमान समय में जीवन में बढ़ती जटिलताओं तथा समाज में बढ़ती समस्याओं के फलस्वरूप शिक्षा एवम् दर्शन के मध्य अत्यन्त दूरियाँ आ गयी हैं। इनमें सामंजस्य स्थापित करने के लिए शिक्षा एवम् दर्शन को एक ही दृष्टिकोण से देखने के प्रयत्न किये जा रहे हैं।

* दर्शन एवं पाठ्यक्रम :- पाठ्यक्रम का निर्माण समाज में प्रचलित तत्कालीन दर्शन के आधार पर किया जाता है। प्रत्येक देश व समाज में जिस प्रकार की विचारधारायें, आदर्श एवम् आकांक्षायें प्रचलन में होती हैं। उन्हीं के अनुरूप पाठ्यक्रम का निर्माण एवम् परिवर्तन किया जाता है।

* पाठ्यविषयों की संख्या का निर्धारण भी दर्शन से सम्बन्धित

* पाठ्यवस्तु पर दर्शन का पूर्ण प्रभाव पड़ता है

* अन्य दार्शनिक तत्व

आदर्शवाद तथा पाठ्यक्रम परिवर्तन :- आदर्शवाद ने शिक्षा के पाठ्यक्रम को अत्यन्त प्रभावित किया है। पाठ्यक्रम के संबंध में आदर्शवादी विचारकों के बहुमूल्य सिद्धान्त आज भी शिक्षाविद् पाठ्यक्रम परिवर्तन के समय ध्यान रखते हैं।

(2)

PAGE No
DATE : / /201

(1) पाठ्यक्रम मानव विचारों तथा आदर्शों पर निर्भर होना चाहिए

2. शाश्वत मूल्यों में सत्यम, शिवम, सुन्दरम का मूल्य सर्वोपरि है शाश्वत मूल्यों की प्राप्ति करना शिक्षा का परम लक्ष्य है"

3 मानव की प्रमुख क्रियाओं का पाठ्यक्रम में महत्व
(a) बौद्धिक
(b) कलात्मक
नैतिक क्रियाओं के आधार पर निर्मित
४

* **प्रकृतिवाद तथा पाठ्यक्रम परिवर्तन** :→ प्रकृतिवादी दार्शनिक एवम विद्वान रूसो ने अपने महान ग्रन्थ 'एमाइल एण्ड एजुकेशन' की रचना की, जिसमें शिक्षा को एक प्राकृतिक क्रिया तथा प्रकृति को सर्वश्रेष्ठ शिक्षक घोषित किया है।

* बालक की प्रवृत्तियों, रुचियों, क्षमताओं आदि को महत्व
(i) व्यक्तिगत विभिन्नताओं का महत्व
(ii) जीवन रक्षा संबंधी विषयों की प्रधानता
(iii) धार्मिक शिक्षा का व्यर्थ होना
(iv) यौन शिक्षा का महत्व

* **प्रयोजनवाद तथा पाठ्यक्रम परिवर्तन** :→ प्रयोजनवादी विचारक शिक्षा को दर्शन की एक प्रयोगशाला के रूप में मानते हैं ये शिक्षा को एक प्राकृतिक क्रिया न मानकर सामाजिक क्रिया मानते हैं। इनके अनुसार शिक्षा एक विकास की प्रक्रिया है इसे प्रयोगवाद या फलवाद भी कहा जाता है

③

→ (i) उपयोगितावाद का समर्थन करता है।
(ii) एकीकरण का प्रयोग
(iii) बाल केन्द्रित पाठ्यक्रम पर बल देता है
जॉन डीवी ने बालकों की चार अभिरुचियां बताती है।—
(a) बातचीत करना
(b) खोज करना
(c) कलात्मक अभिव्यक्ति
(d) रचनात्मक कार्य करना

4. बालक की क्रियाओं व अनुभव पर आधारित
5. पाठ्यक्रम लचीला होना चाहिए

(4) **यथार्थवाद तथा पाठ्यक्रम परिवर्तन**

यथार्थवाद विचारक शिक्षा को वास्तविक जीवन की तैयारी मानते हैं तथा बालक के वर्तमान व्यावहारिक जीवन को महत्व प्रदान करते हैं

शिक्षा के उद्देश्य

1. वास्तविक जीवन की तैयारी
2. मानव समाज को पूर्ण ज्ञान प्रदान करना
3. व्यावसायिक कुशलता एवं क्षमता का विकास करना
4. सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना
5. बालक की प्राकृतिक प्रवृतियों एवम क्रियाओं का स्वतंत्र विकास करना

(5)

पाठ्यक्रम परिवर्तन

(A) उपयोगिता पर बल
(B) व्यापक पाठ्यक्रम
(C) सह-सम्बन्ध स्थापित करके पढ़ाना
(d) वर्तमान आवश्यकता की पूर्ति पर बल देता है
(e) बालक को क्रियाशील रखे
(f) व्यक्तिगत विभिन्नता के सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए
(g) काल्पनिक जगत को मिथ्या मानते हैं

5 | दार्शनिक विचारक एवम परिवर्तन पाठ्यक्रम |

सच्ची शिक्षा का संचालन सच्चा दार्शनिक ही होता है हमारे वास्तविक अध्ययन का विषय मनुष्य का भाग्य होना चाहिए। अनेक दार्शनिकों ने शिक्षक बनकर भी पाठ्यक्रम परिवर्तन में सहयोग दिया

1. महात्मा गाँधी ने आधारभूत शिक्षा का जो प्रत्यय शिक्षा जगत को प्रदान किया
2. स्वामी विवेकानन्द ने खोलो वैदिक विद्यालयों की नींव डाली
3. स्वामी दयानन्द ने रामकृष्ण मिशन स्कूलों का शुभारम्भ किया।
4. रवीन्द्रनाथ टैगोर के शान्ति निकेतन के पाठ्यक्रम तथा प्राकृतिक वातावरण आज भी अनुकरणीय है
5. महर्षि अरविंद का अरविंद आश्रम शिक्षा के क्षेत्र में नई प्रेरणा स्रोत है।

पाश्चात्य दर्शन → सुकरात, प्लेटो, अरस्तू आदि शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह किया।

* मनोवैज्ञानिक तत्व

1. परिपक्वता व विकास तथा पाठ्यक्रम परिवर्तन
2. अभिप्रेरणा तथा पाठ्यक्रम परिवर्तन

अभिप्रेरणा के प्रमुख कारक
- आवश्यकता
- चालक
- अभिप्रेरक
- उद्दीपक

* जन्मजात अभिप्रेरक - भूख, प्यास, नींद, काम, प्रेम, क्रोध आदि
* अर्जित प्रेरक → ① व्यक्तिगत अभिप्रेरक
  → 2 सामाजिक ''

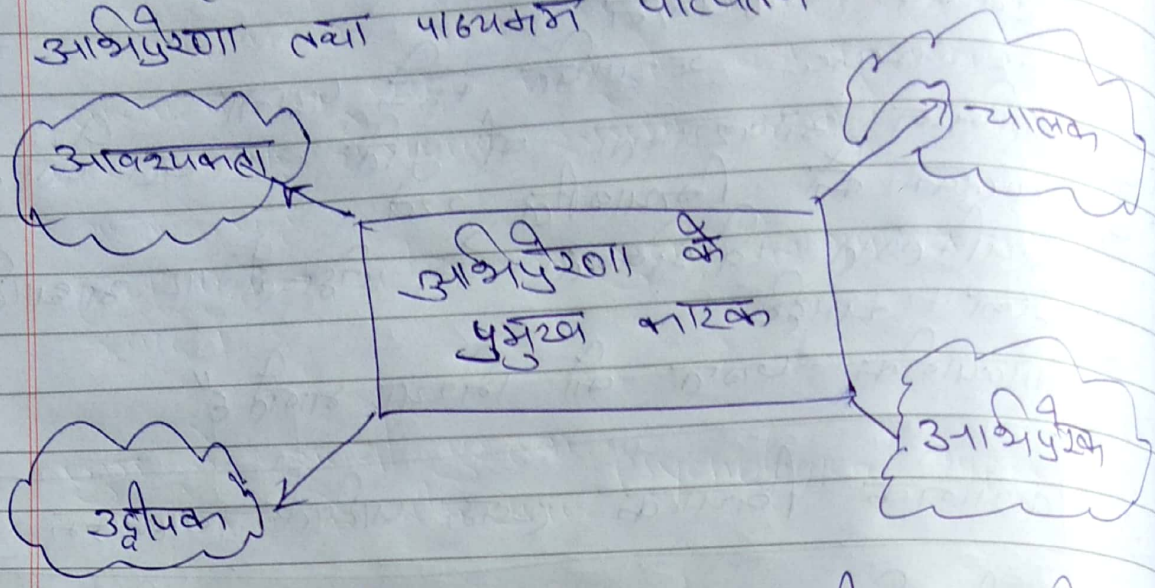

अभिप्रेरणा की प्रविधियाँ
- → शिक्षकों का व्यक्तित्व एवम व्यवहार
- → पुरस्कार एव दण्ड
- → प्रोत्साहन
- → परिणाम का ज्ञान
- → आवश्यकता का ज्ञान
- → रुचियों का अध्ययन
- → आकांक्षा का स्तर
- → कक्षा का वातावरण
- → प्रशंसा एवं निन्दा
- → प्रगति का ज्ञान
- → प्रतियोगिता एव सहयोग
- → सामाजिक कार्यों में भाग लेना
- → सामूहिक कार्य
- → मनोवैज्ञानिक शिक्षण विधियां
- → दृश्य - श्रव्य सामग्री व उदाहरण

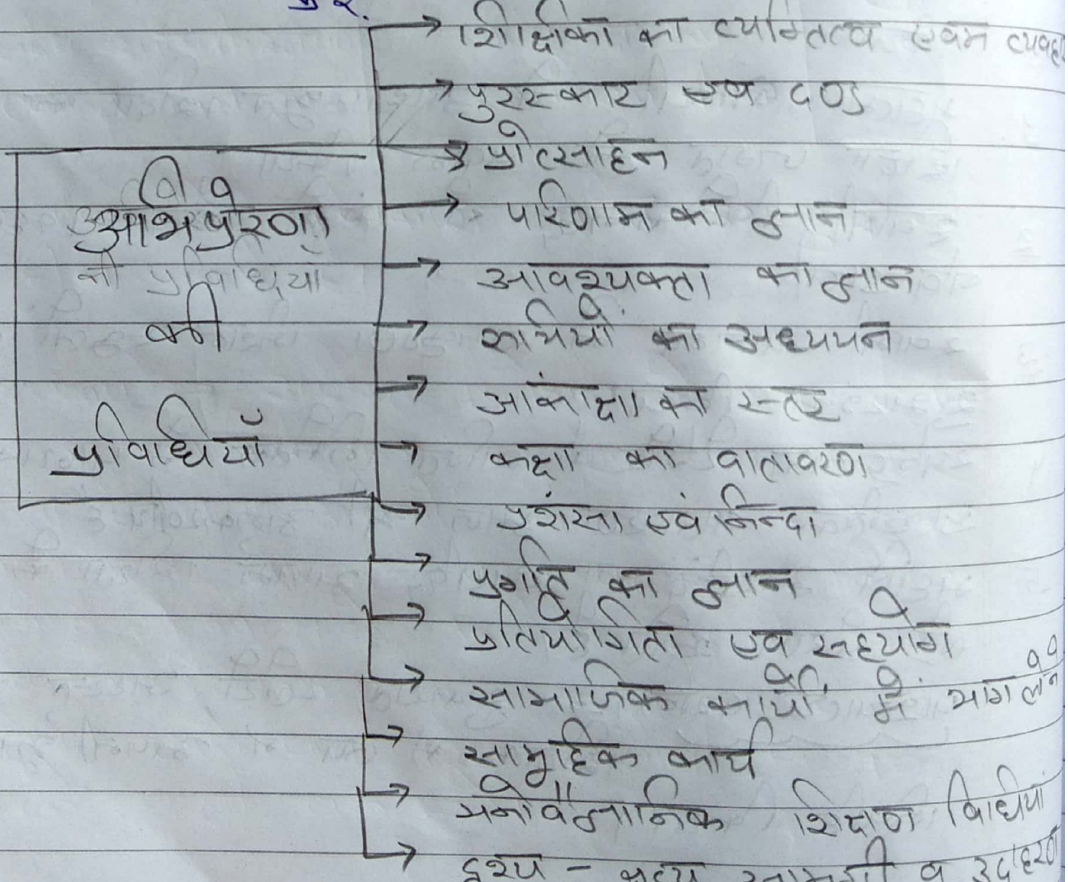

आभिरुचि एवम पाठ्यक्रम परिवर्तन

1. जन्मजात अभिरुचियां ↓ रोना, खेलना, खाना आदि
2. अर्जित अभिरुचियां ↓ अपने आस-पास के वातावरण द्वारा

व्यक्तिगत विभिन्नता एवम पाठ्यक्रम परिवर्तन

- वंशानुक्रम
- वातावरण
- जाति, प्रजाति व देश
- शिक्षा व आर्थिक दशा
- आयु व बुद्धि
- स्वास्थ्य
- मानसिक विकास
- परिपक्वता
- गत्यात्मक योग्यता

विभिन्नता स्वरूप

1. शारीरिक विभिन्नता
2. व्यक्तित्व संबंधी विभिन्नता
3. मानसिक विभिन्नता

(i) बौद्धिक विकास संबंधी विभिन्नता
(ii) मूल प्रवृतिया व संवेगों संबंधी विभिन्नता
(iii) स्वभाव संबंधी विभिन्नता
IV रुचि व दृष्टिकोणों संबंधी विभिन्नता
V सीखने संबंधी विभिन्नता
VI विशिष्ट योग्यताओं संबंधी विभिन्नता
VII चरित्र संबंधी विभिन्नता।

"बालकों के लिए सुव्यवस्थित चरित्र प्रशिक्षण की आवश्यकता है। प्रत्येक बालक अच्छा बनना चाहता है किन्तु यह तभी संभव है जब उसे अच्छा मार्ग प्रदर्शन प्राप्त हो जाये।"

(7)

व्यक्तित्व का विकास एवम पाठ्यक्रम परिवर्तन

मनोवैज्ञानिक अर्थ में व्यक्तित्व अनकों आन्तरिक व बाह्य पहलुओं का समन्वय है जैसे - बुद्धि, योग्यताएँ, रुचियाँ, क्षमतायें, आदतें आदि आन्तरिक पक्ष

बाह्य पक्ष → शरीर, मुख-मुद्रा, वेशभूषा व तड़क-भड़क आदि।

* जुंग ने अपनी पुस्तक psychological Types में व्यक्तित्व के तीन प्रकार

1. अन्तर्मुखी (2) बहिर्मुखी (3) उभयमुखी

अन्तर्मुखी	बहिर्मुखी	उभयमुखी
अपने आप में खोये, आत्मकेन्द्रित, सदैव आत्मविश्लेषण एकान्त प्रिय आदि।	ये आशावादी सामाजिक कार्यों में प्रत्यक्ष रूप समायोजन क्षमता	इनमें दोनों गुण पाये जाते हैं

समाज में अधिकांश व्यक्ति उभयमुखी व्यक्ति ही पाये जाते हैं।

निष्कर्ष → उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मनोविज्ञान का शिक्षा पर पूर्ण प्रभाव पड़ता है तथा अनेकों मनोवैज्ञानिक तत्वों का पाठ्यक्रम परिवर्तन पर। पाठ्यक्रम नियोजकों को मनोवैज्ञानिक तत्वों, तथ्यों व सिद्धान्तों का पाठ्यक्रम परिवर्तन के समय पालन करना चाहिए ताकि बालकों को दी जाने वाली शिक्षा उपयोगी व विकास करने वाली बन सके।